

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये त्रिसप्ततितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে ত্রিসপ্ততিতমং দশকম্ ॥

মথুরাপুরযাত্রারর্ণনম্

নিশময্য তরাথ যানরার্তাং

ভূশমার্তাঃ পশুপালবালিকাস্তাঃ।

কিমিদং কিমিদং কথং ত্রিতীমাঃ

সমরেতাঃ পরিদেৱিতান্যকুর্ন ॥ 73.1 ॥

করণানিধিরেষ নন্দসুনাঃ

কথমস্মান্ রিসৃজেদনন্যনাথাঃ।

বত নঃ কিমু দৈৱমেরমাসী -

দিতি তাস্ত্ৰদগতমানসা রিলেপুঃ ॥ 73.2 ॥

চরমপ্রহরে প্রতিষ্ঠমানঃ

সহ পিত্রা নিজমিত্রমগুলৈশ্চ।

পরিতাপভরং নিতম্বিনীনাং

শমযিষ্যন্ র্যমুচঃ সখাযমেকম্ ॥ 73.3 ॥

অচিৱাদুপযামি সন্নিধিং রো

ভৱিতা সাধু মথৈৱ সঙ্গমশ্রীঃ।

অমৃতাম্বুনিধৌ নিমজ্জযিষ্যে

দ্রুতমিত্যাশ্রসিতা রধূৱকার্ষীঃ ॥ 73.4 ॥

সৱিষাদভরং সযাচ্ছমুচৈঃ

অতিদূৱং ৱনিতাভিৱীক্ষ্যমাণঃ।

मृदु तदिशि पातयन्नपाङ्गान्
सबलोहक्रुररथेन निर्गतोहडुः ॥ 73.5 ॥

अनसा बह्लेन रल्लरानां
मनसा चानुगतोहथ रल्लभानाम्।
रनमार्तमृगं रिषण्णरुक्कं
समतीतो यमुनातटीमयासीः ॥ 73.6 ॥

निषमाय निमज्य रारिणि एरा -
मडिरीक्क्याथ रथेहपि गान्दिनेयः।
रिरशोहजनि किं न्निदं रिडोस्ते
ननु चिद्रेण एररलोकनं समन्तां ॥ 73.7 ॥

पुनरेष निमज्य पुण्यशाली
पुरुषं एरां परमं डुजङ्गडोगे।
अरिकम्भुगदाम्भुजैः स्फुरन्तं
सुरसिद्धौघपरीतमालुलोके ॥ 73.8 ॥

स तदा परमात्सौख्यसिक्कौ
रिनिमण्णः प्रणुरन् प्रकारडेदैः।
अरिलोक्य पुनश्च हर्षसिक्को -
रनुरुत्त्या पुलकारुतो यथौ एराम् ॥ 73.9 ॥

किमु शीतलिमा महान् जले यं
पुलकोहसारिति चोदितेन तेन।
अतिहर्षनिरुत्तरेण सार्धं
रथरसी परनेश पाहि मां एरम् ॥ 73.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये त्रिसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥